Dr. Vinod Baitha
Deptt. of Economics
Marwari college Darbhanga

Economics D.II Hons LECTURE 8

# 'से' का बाजार नियम
# SAY'S LAW OF MARKETS

अर्थशास्त्र में उत्पादन ही वस्तुओं के लिए बाजार पैदा करता है इसकी विस्तृत व्याख्या प्रसिद्ध अर्थशास्त्री फ्रांस के निवासी जिन्होंने वस्तुओं के बाजार संबंधी एक नियम का प्रतिपादन किया था। प्रसिद्ध फ्रांस अर्थशास्त्री जे. बी. से Professor J. B. Say's ने अपनी पुस्तक ट्रेट डी एकोनॉमिक पोलिक Traite Economique Politique में बाजार संबंधी एक संक्षिप्त नियम का प्रतिपादन किया इस नियम को 'से' का बाजार नियम Say's Law of Market कह जाता है। J. B. Say ने यह धारणा व्यक्त किया की "पूर्ति स्वयं अपनी मांग पैदा करती है" Supply creates its own demand जिसके कारण अर्थव्यवस्था में अत्याधिक उत्पादन और बेरोजगारी की समस्या पैदा नहीं होती यदि किसी कारण अत्याधिक उत्पादन के कारण श्रमिकों को हटा दिया जाता है और अर्थव्यवस्था में मांग और पूर्ति एक-दुसरे के समान हो जाते हैं

प्रो० जे. बी. से के अनुसार "उत्पादन ही वस्तुओं के लिए बाजार पैदा करता है ज्योंही किसी वस्तु का उत्पादन होता है त्योंही उसी क्षण से वह अपने मूल्य के पूरी मात्रा में अन्य वस्तुओं के लिए बाजार पैदा करता है। दुसरी वस्तु की पूर्ति जितनी एक वस्तु की मांग के अनुकूल होती है उतनी कुछ और नहीं" दुसरे शब्दों में जे. बी. से के अनुसार देश में सामान्य अति उत्पादन एवं सामान्य बेरोजगारी की दशाएँ उत्पन्न हो ही नहीं सकती क्योंकि जो कुछ उत्पादन किया जाता है उस वस्तु का उपभोग अवश्य हो जाता है। से के नियम का सारांश निम्नलिखित रूप में दिखायी पड़ता है।

1. पूर्ति सदैव अपनी मांग का स्वयं सृजन करती है। "Supply always creates its own demand"
2. यह उत्पादन ही है जो वस्तुओं के बाजार का सृजन करता है। It is production which creates market for goods.

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो० जे. बी. से ने नियमों की व्याख्या इस प्रकार की है। उपर्युक्त कथनों का यह अर्थ है कि बाजार ही उत्पादन का सृजन करता है। उसके मतानुसार मांग का मुख्य स्रोत उत्पादन के विभिन्न साधनों से प्राप्त होने वाली आय होती है। और यह आय उत्पादन प्रक्रिया से स्वतः ही उत्पन्न होती है जब कभी उत्पादन में नयी प्रक्रिया शुरू की जाती है और उसके परिणाम स्वरूप एक निश्चित उत्पादन उपलब्ध होता है तो उत्पादन के साथ-ही-साथ मांग इसलिए बढ़ती है, कि फलतः जितना माल तैयार होता है। वह सारा स्वतः बिक जाता है। से के अनुसार यह उत्पादन है जिसके द्वारा वस्तु की बाजार उत्पन्न की जाती है। It is production which creates market for goods इस तरह प्रो० से ने बाजार नियम की व्याख्या की। से के बाजार नियम की क्रियाशीलता के कई कारण है जिनमें प्रमुख कारण निम्न है। से ने बाजार के क्रियाशीलता

Scanned by CamScanner

दो कारण बताए जो निम्नलिखित है

1. लोचपूर्ण ब्याज की दर — से के बाजार नियम की क्रियाशीलता इस धारणा पर आधारित है कि साधन स्वामियों द्वारा अर्जित समस्त आय उन वस्तु के क्रय में व्यय हो जाती है जिनके उत्पादन में सहायक होते हैं। यदि उनकी आय का कुछ भाग व्यय नहीं होता और बच जाता है तो उसका स्वतः विनियोग हो जाता है। इस प्रकार बचत विनियोग के सदैव बराबर होता है। यदि दोनों में कोई अन्तर होगा तो ब्याज की दर के माध्यम से सामान्यतः स्थापित हो जाता है। उदाहरण के लिए यदि किसी समय बचतों की मात्रा अधिक हो जाती है तो इससे ब्याज दर कम हो जाती है। ब्याज की कम दर एक ओर अधिक विनियोग के लिए उत्प्रेरणा का कार्य करती है वहीं दूसरी ओर अधिक बचत को निरुत्साहित करती है। ब्याज की दर उस समय तक कम होती जाएगी जब तक सारी अतिरिक्त बचतों का विनियोग नहीं हो पाता। अतः अतिरिक्त बचतें ब्याज की दरों में कमी होने की प्रक्रिया द्वारा स्वतः ही विनियोजन का रूप ले लेती हैं। इस प्रकार ब्याज की दर की लोचशीलता सदैव ही बचत और विनियोग को बराबर रखती है।

2. लोचपूर्ण मजदूरी — प्रो० A.C Pigou ने से के नियम को बाजार श्रम के प्रसंग में प्रस्तुत किया है उसके अनुसार स्वतंत्र प्रतियोगिता के अधीन आर्थिक प्रणाली की यह प्रवृत्ति रहती है कि श्रम-बाजार अपने आप पूर्ण रोजगार प्रदान करे। मजदूरी के ढाँचे में कठोरता और स्वतंत्र बाजार की अर्थव्यवस्था की कार्य प्रणाली में हस्तक्षेप से बेरोजगारी होती है। इस संदर्भ में यहाँ इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री कीमतों और मजदूरी को पूर्णतः लोचदार मानते हैं। तथा वे स्वीकार करते हैं कि अर्थव्यवस्था अपने आप को स्वतः ही पूर्ण रोजगार के स्तर पर समायोजित कर लेती है। पीगू ने इसी आधार पर रोजगार सिद्धान्त की व्याख्या करते समय अपनी विचारधारा को से के नियम की व्याख्या पर लागू कर प्रतिष्ठित विचारधारा को व्यवस्थित रूप प्रदान किया है। पीगू की इस विचारधारा इस मान्यता पर आधारित है कि यदि मजदूर अपना पारिश्रमिक अपनी सीमान्त उत्पादकता के बराबर लेने को तैयार रहे तो श्रम बाजार में कभी भी बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न नहीं हो सकती।

से के बाजार नियम के रोजगार सिद्धान्त की मुख्य बातें निम्नलिखित हैं।

1. प्रत्येक अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार के स्तर पर कार्य करती है।
2. अर्थव्यवस्था में स्वतः समायोजन की क्षमता होती है। अतः जो कुछ उत्पादित किया जाता है। वह सभी उपभोग कर लिया जाता है।
3. देश में अतिउत्पादन असंभव है क्योंकि प्रत्येक अतिरिक्त उत्पादन समाज में अतिरिक्त क्रय शक्ति को जन्म देती है। फलतः कुल आय कुल व्यय के बराबर हो जाता है।
4. चूँकि अतिउत्पादन असंभव है सामान्य बेरोजगारी भी सम्भव नहीं है।
5. ब्याज दर लचीलापन सदैव बचत और विनियोग को बराबर रखता है।
6. पूर्ण स्पर्धा की दशा में मजदूरी की कटौती कर के पूर्ण रोजगार स्थापित किया जा सकता है।

P.T.O

Scanned by CamScanner

7. बेरोजगारी की स्थिति तभी आती है जब मजदूरी दर या ब्याज तथा अन्य कीमतों में अपरिवर्तनशीलता अथवा जड़ता होती है। तथा सरकार व अन्य संस्थाओं द्वारा बाजार की शक्तियों को स्वतंत्र रूप से कार्य करने में हस्तक्षेप किया जाता है।

इस तरह के 'से' का बाजार नियम सिद्धान्त की कुछ मान्यताएँ हैं जो निम्न लिखित हैं

1. पूर्ण प्रतियोगिता — श्रम बाजार तथा उत्पादन बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति पायी जाती है।

2. पूर्ण रोजगार की प्रकृति — एक मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था में सदैव पूर्ण रोजगार की साम्य अवस्था को प्राप्त करने की प्रवृत्ति पायी जाती है। अर्थात पूर्ण रोजगार की साम्य अवस्था है।

3. हस्तक्षेप न करने की नीति —— सरकार द्वारा आर्थिक शक्तियों की क्रियाशीलता में कोई बाधा नहीं डाली जाती।

4. बंद अर्थव्यवस्था — इस सिद्धान्त की एक अन्य मान्यता यह है कि अर्थव्यवस्था में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नहीं हो रहा है।

5. लोचशीलता —— इस सिद्धान्त की अत्यन्त ही महत्वपूर्ण धारणा है कि कीमतों मजदूरी की दरों में लोचशीलता होती है। जिसके फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में स्वचालित साम्य साम्य की अवस्था को प्राप्त करना संभव हो पाता है।

6. मुद्रा की सीमित भूमिका —— मुद्रा की अर्थव्यवस्था में सीमित भूमिका है अर्थात वह एक विनिमय माध्यम के रूप में ही कार्य करता है। और अर्थव्यवस्था के वास्तविक संतुलन को प्रभावित नहीं करता।

7. संग्रह का अभाव — से के नियम की एक अन्य मान्यता यह है कि समस्त आय अपने आप उपभोग और निवेश पर खर्च हो जाती है। और अर्थव्यवस्था में मुद्रा का संग्रह नहीं होता है

8. विस्तृत बाजार — बाजार के विस्तार की संभावना हो सकती है।

9. दीर्घकाल —— 'से' का नियम दीर्घकालीन पूर्ण रोजगार की मान्यता पर आधारित है अल्पकाल में किसी वस्तु विशेष का अति उत्पादन संभव हो सकता है। जो कि दीर्घकाल में स्वतः समाप्त हो जाता है।

इस प्रकार 'से' के बाजार नियम की आलोचनाएँ भी हैं जो यस प्रकार है से के बाजार नियम की प्रमुख धारणा है कि "पूर्ति स्वयं मांग पैदा करती है" व्यवहारिक रूप से अर्थव्यवस्थाओं पर लागू नहीं होती जिसके परिणाम स्वरूप सामान्य से अधिक उत्पादन एवं सामान्य बेरोजगारी नहीं हो सकती और 1929-33 की विश्वव्यापी मंदी के समय में अवास्तविक सिद्ध हुई। किन्स ने अपनी पुस्तक General Theory में क्लासिकलों की कड़ी आलोचना की है किन्स ने अपनी पुस्तक ... के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि वास्तविक जीवन में इस नियम की कोई मान्यता नहीं है

---

Scanned by CamScanner